Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

आधुनिक हिन्दी कवियत्री विरूपीकरण : कुसुम असंल

प्रा.डॉ.शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभाग,
कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापुर, जि. जालना

सत्तरोत्तर की कवयित्रियों में कुसुम अंसल एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जो भीतरी परिवेश को खोजने में अधिक व्यस्त है बजाय बाह्यावरण को अपनी आन्तरिकता के बारे में उसकी खोज, उसकी अभिव्यंजना, उसका समर्थन वे एक विशिष्ट स्तर पर स्थिर होकर करना चाहती है । विरूपीकरण उनका एक ऐसी रूपिताओं का संग्रह है जो कविताएँ उनके मत से जीवनधारणाओं का बाष्पसा है । इन कविताओं में मात्र कवयित्री का मत नहीं अपितु अपने मन के दर्पण में प्रतिबिंबिन हुई सारी जीवन की अन्य परिस्थितियों का शृंखलाबद्ध पद्धति से किया हुआ विचार है । सारी अनुभूतियों का अधिष्ठान शरीर है और शारीरिक अनुभूतियाँ मानसिक आन्दोलनों की पृष्ठभूमि होती है । दूनिया का यह सत्य ही कुसुम अंसल की विरूपीकरण संग्रह की प्राय: सभी कविताओं की आत्मा है । उनकी सारी कविताओं में मानवीय जीवन से संलग्न सारी संवेदनाएँ प्रकट हुई है । कई जगहों पर कवयित्री का व्यक्तिगत दृष्टीकोन प्रकट हुआ है तो कभी दिखाई देता है कि मनस्विनी कवयित्री भावगम्भीर हो गयी है । कहाँ अद्‌भूतता दृष्टिगत होता है तो कहीं पर अत्यंत सुस्पष्ट सायान्वित और कठोरमन वैचारिकता नजर आती है । कवयित्री का प्रयत्न है कि दूसरों की एहसास हो व्यक्ती के साथ-साथ वह एक सामाजिक परंतु प्रबल ऐसा घटक है ।

विरूपीकरण में-

१) **सामाजिक संवेदना :**

कवयित्री की धारणा है कि आज के सभी दु:खों का मूल मनुष्य की उसकी अपनी सभी तरह की दूर्बलताएँ है । अपने संकलन के बारे में अपनी पृष्ठभूमी स्पष्ट करते हुए संचय कवयित्री ने यह स्पष्ट किया है । कवयित्री के मत से हर आदमी अपनी मनोविज्ञानलित्य भूमिका तथा बुद्धिप्रधान तर्कों पर अपने ही विवेक नियंत्रण रख पाने में असमर्थ है । पूर्ण

समाज का एक घटक होणे पर भी कवयित्री स्वयं के बारे में होनेवाली अपनी आत्मपरकता की दूहाई देती है । वैश्विक दूश्चिनाएँ तथा अनेक आन्दोलन भी उसे वैश्विक दूरदृष्टि प्रदान नहीं करती सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ कवयित्री की विचारप्रवृत्त जरुर करती है । उसकी अनेक कविताओं में यह आललीतता तथा बाह्याडम्बर से विन्मुख तर्कशक्ति प्रतीत होती है यह स्पष्ट होता रहता है कि सामाजिकता से जुडा हुआ कवयित्री का अन्तर्मन सामाजिकता से अलग ही होकर खडा है, कही पर भी वह सामाजिकता में विलीन नहीं हुआ है । कभी वह कहती है " अब आज, जब फिर से । सागर ने मुझे आकर्षित किया ।" १ वह सिर्फ आकर्षित होकर रूकती नहीं है । वह चाहती है कि, " मैं भीतर उतरकर समन्दंर के/ अन्दर का यथार्थ देखना चाहती हूँ।"२ लेकिन वह भीतर दाखिल नाहीं होती । उसके पहलेही अन्ध:कार पिघलती रोशनी, स्याह डर के जाले उसे डराने लगते है । भीतर का यथार्थ जानने के लिए उसे जो करना चाहिए वह नहीं करती । एक असहायता लेकर वह खुले आसामान में उड रही है । ३ अपनी इसी आत्मलीना प्रवृत्ति के करण वह खाडदरों में भी बेजान सौंदर्य देख सकती है । 'मेरे तुम्हारे भीतर/ कुछ अनाम रचता है।"४ कहती हुई कवयित्री अपने अन्तर्यान में कचीटती वेदना को कभी ना भूलने की बात कहती है । " पर भीतर जो कहता रहा है ।-दर्द क्या गिन पनि की / प्रदर्शन की वस्तू है---।५ अपने अन्तरंग में छिपे दर्द को वह वैसे ही जतन करना चाहती है । उसे अभिव्यक्त कर सामाजिक सार्वत्रिक रूप देना वह नहीं चाहती किसी अनजाने 'तुम' को सम्बोधित कर वह कहती है "आज तुम जो मिले हो । तुम्हारे अन्त:करण में एकाकार । मैं आकाशगंगा और सितारे अपने भीतर से तुम्हारे भीतर/ ६ इस तरह भीतर उसकी आत्मलीनता प्रवेश करती है परंतु उसे सार्वत्रिक, सामाजिकता का भाव स्पर्श नहीं करता अपनी 'एकपत्र' कविता में अपनी इच्छा शक्ति की दूहाई देकर वह कहती है "मेरी इच्छा शक्ति इतनी अधिक आईना बन गयी है । मेरी अस्तित्व-संघटनाओं को/ विश्वभर में बिम्बित कर रही है ।

इस तरह विशिष्ट इनीगिनी कविताओं में कुसुम अंसलजी की सामाजिक संवेदना प्रकट होती है ।

२) **परम्परागत मूल्यों से संघर्ष :**

संघर्ष करते रहने का अर्थ ही मनुष्य बने रहना है । कवयित्रीने संकलन के बारे में दो शब्द कहते समय ही अपने संघर्ष का अर्थ कारण, भाव आदि स्पष्ट किए है । वे कहती है कि विरूपीकरण की कविताएँ एक मानसिकता विशेष की कविताएँ है ।

संदर्भ :

१. असल कुसुम-विरूपीकरण, पृ.२८
२. वही, पृ.क्र.२८
३. वही,पृ.क्र.२९
४. वही,पृ.क्र.३८
५. वही,पृ.क्र.३९
६. वही,पृ.क्र.५४